

यह हम सब जानते हैं कि भारतीय उपमहाद्वीप एक दिन में गुलाम नहीं बना और न ही इसे अंग्रेजों ने किसी युद्ध में जीता। आइए इस लेख द्वारा जानने की कोशिश करें कि किस तरह हम भारतवासियों को पीछे धकेलने के लिए कौन कौन सी रणनीतियाँ बनाई गयीं जिनका पालन आज के स्वतंत्र भारत में भी पूर्ण निष्ठा के साथ हो रहा है। प्रस्तुत लेख [भाई राजीव दीक्षित जी](#) के एक भाषण का लिखित स्वरूप है जिसमें मुख्य बिंदुओं की संक्षेप में चर्चा की गई है। इस तथा आने वाले लेखों का उद्देश्य देशवासियों में अपनी भूली हुई संस्कृति एवं स्वाभिमान को पुनर्जागृत करना है। मैं आशा करता हूँ कि आप इसे पूरा पढ़ेंगे और अपने राष्ट्र के उत्थान में अपना यथासंभव योगदान प्रदान करेंगे। आप इस व्याख्यान को स्वयं भाई राजीव जी के श्रीमुख से नीचे दिए गए लिंक पर भी सुन सकते हैं।

1. **McCaulay की नीति:** यह सर्वविदित तथ्य है कि जिसे गुलाम बनाना हो उसे नीचा दिखाना पड़ता है। यदि नौकर खुद को मालिक से ऊंचा समझने लगे तो समझिए मालिक की शामत आ गई। सन् 1833 में East India Company का एक अंग्रेजी अफसर भारत आया और तत्कालीन Governor General के Cabinet में शामिल हो गया। उसका काम था कि वह सम्पूर्ण भारत का भ्रमण कर अंग्रेजी हुकूमत के लिए तथ्य जुटाए जिनके आधार पर वे भारत को गुलाम बना सकें। दूसरे शब्दों में उसे भारत की कमजोरी ब्रिटेन में प्रस्तुत करनी थी। सन् 1835 में जब वह ब्रिटेन वापिस गया तो उसने वहाँ की संसद में 2 फरवरी को अपना शोध प्रस्तुत किया:

**“I have traveled across the length and breadth of India and I have not seen one person who is a beggar, who is a thief. Such wealth I have seen in this country, such high moral values, people of such calibre, that I do not think we would ever conquer this country, unless we break the very backbone of this nation, which is her spiritual and cultural heritage, and, therefore, I propose that we replace her old and ancient education system, her culture, for if the Indians think that all that is foreign and English is good and greater than their own, they will lose their self-esteem, their native self-culture and they will become what we want them, a truly dominated nation.”**

जिसका सीधा सा मतलब है कि भारत की सांस्कृतिक और अध्यात्मिक शक्ति पर प्रहार करो जिससे भारत वासी टूट जायेंगे और खुद को अंग्रेजों के सामने हीन महसूस करने लगेंगे। इस तरह भारतीय बहुत आसानी से गुलाम बनाये जा सकते हैं। और यही किया McCaulay ने, उसने ब्रिटिश हुकूमत को बता दिया कि भारत उनसे अधिक समृद्ध और शक्तिशाली है जिसे

तब तक गुलाम नहीं बनाया जा सकता जब तक उसकी रीढ़ की हड्डी न तोड़ी जाए। वो रीढ़ की हड्डी है अध्यात्म और संस्कार।

2. **शराब का भारतीयों से परिचय:** प्लासी का युद्ध जीतने के बाद अंग्रेजों ने भारत को अपना गुलाम बनाने की प्रक्रिया और तेज़ कर दी। इसी युद्ध को जीतने के बाद East India Company का एक अफसर फ्रांसिस ब्रेकन भारत आया जिसने बंगाल को लूटने में कंपनी की सहायता की। वह ब्रिटेन वापिस गया और समय समय पर संसद में होने वाली बहस में हिस्सा लेता रहता था। एक ऐसी ही बहस, जिसमें मुद्दा था कि भारत के चारित्रिक पतन की प्रक्रिया में कौन कौन से कदम उठाये जा रहे हैं, उसने हिस्सा लिया। उसने उस बहस में कहा, चूँकि भारत सांस्कृतिक और अध्यात्मिक धरातल पर बेहद शक्तिशाली राष्ट्र है इसलिए वे उसे तोड़ने में कुछ खास तो नहीं कर पाये हैं परंतु इस विशालकाय मजबूत दीवार में एक छोटे से छेद के तौर पर उन्होंने बंगाल में एक शराब का ठेका खुलवा दिया है। उसने आगे कहा कि 1760 से पहले भारत में कोई शराब नहीं पीता था। 1760 के बाद उन्होंने शराब की पहली दुकान का ठेका एक ठेकेदार को दे दिया। ब्रेकन ने ठेकेदार से पूछा कि क्या भारतीय शराब पीते थे तो उसने जवाब दिया कि नहीं! क्यों नहीं पीते थे? ठेकेदार बोला उसके 3 कारण हैं:

1.1.1. भारतीयों के लिए शराब पीने का मतलब अपना धर्म भ्रष्ट करना है।

1.1.2. भारत की जलवायु उन्हें शराब पीने से रोकती है।

1.1.3. शराब सबसे तुच्छ पेय है जो मनुष्यों के लिए नहीं है।

इस शराब की दुकान की कई अन्य शाखाएं कुछ ही सालों में पूरे बंगाल में खुल गयीं। यह वार्ता है सन् 1832 की जिसमें ब्रेकन ठेकेदार से हुई बातचीत के अंश प्रस्तुत कर रहा है। ठेकेदार से आगे पूछने पर पता चला कि भारतवासी अब कितनी शराब पी रहे हैं? जवाब मिला कि इस दुकान के पिछले मालिक तक यहाँ सिर्फ अंग्रेज़ ही आकर शराब पीते थे परंतु अब यहाँ भारतीयों की भरमार है। इन्होंने कब से इतनी शराब पीनी शुरू कर दी और क्यों? ठेकेदार बोला कि इनके चरित्र तो ऊंचे थे परंतु ये हमारे बहकावे में फँस गए। हमने इन्हें तरह तरह के लालच देकर इनकी वासना को अग्नि दी जिसके कारण ये ठेकों की तरफ आकर्षित हैं। आरम्भ में भारतीय चोरी छिपे पीते थे और बाद में धीरे धीरे ये खुले आम होता चला गया। आज मंज़र यह है कि शराब न पीने वाला नास्तिक समझा जाता है। हमारा अधिकांश युवा समुदाय इसकी चपेट में है। 1832 तक भारत में शराब की 350 दुकानें थीं और जब अंग्रेज़ भारत को छोड़कर गए तब भारत में 1500 शराब के ठेके थे। आज ऐसे 24,400 दुकानें हैं। ये तो वैध दुकानें हैं। अवैध दुकानें इनसे भी ज्यादा हैं। हर मोहल्ले में एक ठेका

आपको मिल जाएगा। दूध मिले न मिले पर शराब आपको मिल ही जाएगी। शराब पीकर आदमी बेटी, बहु, बहन और पत्नी में अंतर भूल जाता है। 98 से 100 फीसदी बलात्कार शराब के नशे में होते हैं। और इनका licence आज भी सरकार से ही मिलता है। अंग्रेज़ ये बात जानते थे कि शराब देवता को दानव बनाने में देर नहीं लगाती, इसीलिए उन्होंने सबसे पहला काम हमें तोड़ने की दिशा में जो किया वह था शराब का हमसे परिचय। गोरे अंग्रेज़ों ने हमें गुलाम बनाने की नीति बनाई और सरकार उसी नीति का पूर्ण निष्ठा से पालन कर रही है। भारत में 80 करोड़ लीटर शराब पैदा की जाती है। 5-7 % भारतवासियों में शराब की ऐसी बुरी लत है कि वे उसके बिना जी नहीं सकते।

3. **वेश्यावृत्ति:** एक और सबसे बड़ी चुनौती हमारे सामने है वेश्या वृत्ति की। हमारे देश में वेश्यावृत्ति के racket में धकेली गयीं माताओं और बहनों में से 34% वो हैं जिन्होंने अपने पतियों की हिंसा के कारण घर छोड़ा है। ये हिंसा उनके पति शराब के नशे में धुत्त होकर करते हैं। ये आंकड़े सरकार के हैं। बंगाल का एक मशहूर red light इलाका है जिसे सोनागाछी के नाम से जाना जाता है। आपको शायद यह मालूम न हो कि ये भारत का सबसे पहला वेश्या बाज़ार था जिसे अंग्रेज़ों ने स्थापित किया था अपनी वासना की शांति के लिए। वे भारत की बहु बेटियों को जबरन उठा कर ले जाते थे और उनके साथ वहाँ दुष्कर्म करते थे। 1760 से पहले वेश्या नाम की कोई चीज़ भारत में मौजूद नहीं थी। कुछ एक मुगल बादशाह ऐसे थे जो बहु बेटियों को उठवा लेते थे और उन्हें अपने महल की एक खास जगह में रखते थे जिसे हरम कहा जाता था। वे उनसे नाच करवाते थे परंतु इतनी गिरी हुई अश्लीलता वहाँ भी नहीं होती थी। मौर्य वंश के समय नगरवधू होती थी परंतु वह भी वेश्या नहीं होती थी। उसका काम होता था घूम घूम कर स्त्रियों को संगीत और नृत्य की शिक्षा देना। समाज में उनका भी एक सम्मान था। उनके अपने अधिकार होते थे। उनकी इच्छा के विरुद्ध कोई उन्हें छू भी नहीं सकता था। जात रहे उस समय नाच गाने को सबसे तुच्छ श्रेणी का काम समझा जाता था जो आज बड़े ही गौरव का विषय है। हमारे देश में जहाँ स्त्री को पवित्रता और करुणा की मूर्ति समझा जाता था, उसी देश में आज ये हालात हैं कि बाप अपनी बेटी, भाई अपनी बहन, मामा अपनी भांजी और न जाने किस किस तरह से रिश्तों की मर्यादा को उधेड़ा जाता है! लालच के लिए उन्हें बाज़ारों में वस्तुओं की तरह नीलाम किया जाता है। आप अंदाज़ा लगा सकते हैं हम कहाँ थे और आज किस गर्त में पड़े हैं! हमारी मानसिकता कैसी पशुओं वाली हो गई है! अरे, पशुओं में भी शायद एक संयम नाम की चीज़ होती है। हमने तो अपनी मानसिक ऊर्जा से उन मर्यादाओं को भी तोड़ दिया है। कितना गिरा दिया है हमने खुद को!

4. **अश्लीलता:** अंग्रेजों ने जो अभद्र जीवन शैली का प्रदर्शन किया, उनमें अश्लीलता की भरमार थी। परपुरुष या परस्त्री संबंध उनके लिए जीवन का एक अभिन्न अंग था। उन्हें मज़ा आना चाहिए बस चाहे उसके लिए कितना भी गिरना पड़े! अंग्रेज़ दार्शनिक तो यहाँ तक मानते थे कि स्त्री भोग की वस्तु है जिसमें आत्मा नहीं होती। वहीं हम लोग उसे देवी मानते थे। अश्लीलता बड़ी तेज़ी से फैल रही है आज हमारे देश में। 1992 से पहले विदेशी magazines बैन थीं। उस वर्ष में वैश्वीकरण के चलते विदेशी फिल्मों और magazines भारत में घुस गयीं। फिर इंटरनेट के आ जाने से और कोई लगाम न होने से सेक्स तो अब हर मोबाइल का हिस्सा हो गया है। इस अश्लीलता की चपेट में सबसे अधिक 12-55 साल के लोग होते हैं। टीवी पर दिखाए जाने वाले धारावाहिक हों या फिल्में, सब में पराये अवैध संबंध नमक मिर्च लगा कर दिखाए जाते हैं। यही सब एक ऐसे चरित्र का निर्माण करती है जिससे आप एक सभ्य और शक्तिशाली समाज की अपेक्षा नहीं कर सकते।
5. **समलैंगिकता:** भारतीय दर्शन हमेशा से इस बात पर ज़ोर देता आया है कि आनंद का अंतिम छोर आत्मा की अनुभूति में है। जिसने खुद को पा लिया उससे अधिक सुखी और कोई नहीं। इसीलिए सांसारिक जीवन के बाद परम आनंद के लिए हमारे दर्शन में साधना का विधान था। इसके ठीक उलटे, अंग्रेजों के लिए शारीरिक सुख ही जीवन का मुख्य ध्येय था। जिसने इसका मज़ा नहीं लिया उसका पैदा होना एक अभिशाप है! इसीलिए लगभग पूरा अंग्रेज़ी समुदाय शारीरिक तृष्णा की पूर्ति के लिए प्रयासरत था। जब एक तरह के शारीरिक संबंध से वे लोग ऊब गए तो उनमें एक उन्माद ने जन्म लिया और उन्होंने अप्राकृतिक रूप से एक ही लिंग से संबंध स्थापित करने की विचारधारा को जन्म दिया जिसको समलैंगिकता कहते हैं। यह एक ऐसा मानसिक विकार अथवा बीमारी है जिसमें व्यक्ति के जीवन का एकमात्र उद्देश्य केवल शारीरिक भोग की चरम अवस्था पर पहुँचना रह जाता है और वह यह सोचता है कि वह उसके बाद संतुष्ट हो जाएगा परंतु ऐसा कभी नहीं होता। यह कोई जन्मजात बीमारी नहीं होती बल्कि एक गिरी हुई सोच से पैदा हुई दिमागी गड़बड़ी होती है। पश्चिम में यह एक बहुत बड़ा विषय है और उसी विषय को भारत जैसे देश में भुनाने के लिए विदेशी और स्वदेशी मीडिया को पैसे का लालच देकर इस विचारधारा का प्रचार किया जाता है। मानसिक गुलामी से ग्रस्त और देश के हित में निर्णय लेने में पूर्णतया अक्षम हमारी व्यवस्था ने भी बीते दिनों भारत में ऐसी विचारधारा को बल प्रदान करने के लिए एक कानून भी पारित कर दिया है। अंग्रेजों के लिए तो ऐसा स्वाभाविक भी था क्योंकि उन्हें जानवर से मनुष्य बने अधिक समय नहीं हुआ था इसीलिए उनमें मनुष्यता को पनपना अभी बाकी था परंतु हम तो मनुष्यता की सदियों से रक्षा करते हुए आए थे। हमें उन्हें अपने स्तर तक लाना चाहिए था न कि खुद को उनके स्तर तक गिराना चाहिए था!

सन् 1836 में T B McCaulay ने अपने पिता को एक खत लिखा था जिसमें उसने कहा था कि यदि हमारी

योजनाओं के मुताबिक काम होता रहा तो एक दिन भारत में कोई भी सच्चा भारतीय नहीं रह जाएगा। सच्चे भारतीय से उसका मतलब था ऐसा व्यक्ति जो चरित्र, अध्यात्म, संस्कार और नैतिक मानदंडों में बहुत ऊंचा हो। उसने आगे कहा कि जिस भी दिन ऐसा हुआ तो समझ लेना भारत की नस्ल पर हमारा ही कब्जा होगा क्योंकि ऐसी सोने की चिड़िया का शोषण भला किसे नहीं भाएगा! यदि आप विश्लेषण करें तो सबसे पहला point जड़ है और बाद के points उस पेड़ से निकली शाखाएं जो स्वतंत्र भारत में दिन प्रतिदिन बड़ी होती जा रही हैं!

जय भारत!